जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – सितम्बर 2025 ।। अंक – 62 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

रिंकी देवी बनी
उद्यमी जीविका दीदी
(पृष्ठ – 02)

जीविका से मिली मदद तो
प्रेमलता बनी सफल उद्यमी
(पृष्ठ – 03)

रूबी देवी : जीविका की बदौलत
बनी सशक्त और स्वावलंबी
(पृष्ठ – 04)

जीविका दीदियों की स्टार्टअप पहल : ग्रामीण बिहार में बदलती तस्वीर

बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था लंबे समय तक परंपरागत कृषि और लघु व्यवसाय पर टिकी रही है। महिलाओं की भूमिका मुख्यत: घर और खेत–खलिहान तक सीमित मानी जाती थी। लेकिन अब यह तस्वीर तेजी से बदल रही है। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएँ आज स्टार्ट–अप की दुनिया में अपनी पहचान बना रही हैं। यह बदलाव केवल आर्थिक विकास का नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तीकरण और आत्मनिर्भरता का भी प्रतीक है।

परंपरा से नवाचार की ओर

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ पहले सिलाई–कढ़ाई, बकरी पालन या मवेशी पालन तक सीमित रहती थीं। ग्रामीण क्षेत्र की इन महिलाओं को जब जीविका के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों में जोड़ा गया, तब उनकी सामूहिक शक्ति उभरकर सामने आई। समूह आधारित बचत, ऋण उपलब्धता एवं प्रशिक्षण ने इन महिलाओं को जोखिम लेने और नए उद्यम शुरू करने का साहस दिया। अब वे केवल परंपरागत रोजगार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ब्यूटी पार्लर, फूड प्रोसेसिंग यूनिट, डेयरी प्रोडक्ट्स, हैंडीक्राफ्ट्स और यहां तक कि डिजिटल सेवाओं जैसे क्षेत्रों में स्टार्टअप चला रही हैं।

उद्यमिता का प्रसार

स्टार्टअप की अवधारणा पहले केवल शहरों तक सीमित समझी जाती थी। लेकिन जीविका दीदियों ने यह मिथक तोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, भागलपुर की कुछ दीदियों ने सामूहिक रूप से "नमकीन एवं स्नैक्स यूनिट" शुरू की, जिसका उत्पाद स्थानीय बाजार के साथ–साथ नजदीकी शहरी क्षेत्रों में भी बिक रहा है। इसी तरह, सहरसा की महिलाओं ने मिलकर "दूध एवं डेयरी प्रोडक्ट्स" की ब्रांडिंग की और अब वे अपने उत्पादों को पैकिंग और मार्केटिंग के साथ बेच रही हैं। मुजफ्फरपुर में बैग क्लस्टर का संचालन भी जीविका दीदियाँ कर रही है। ये पहल न केवल रोजगार के नए अवसर पैदा कर रही हैं, बल्कि महिलाओं को व्यवसाय चलाने, वित्तीय प्रबंधन करने और बाजार से जुड़ने की समझ भी दे रही हैं।

सामूहिकता से मिली ताकत

जीविका की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि उसने महिलाओं को सामूहिक शक्ति का महत्व सिखाया है। जब एक महिला अकेले उद्यम शुरू करती है, तो कई चुनौतियाँ उसके सामने आती हैं, इनमें मुख्य रूप से पूँजी की कमी, बाजार तक पहुँच और सामाजिक दबाव। लेकिन जब वही काम समूह के रूप में किया जाता है, तो चुनौतियाँ अवसरों में बदल जाती हैं। किसी एक सदस्य के पास कौशल होता है, तो दूसरी सदस्य पूँजी प्रबंधन करती है और तीसरी सदस्य मार्केटिंग की जिम्मेदारी संभालती है। इस तरह समूह आधारित स्टार्टअप मॉडल ने ग्रामीण महिलाओं के लिए एक मजबूत आर्थिक ढांचा खड़ा किया है।

सामाजिक बदलाव की बयार

ऐसे नवाचारों का असर केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। जिन महिलाओं को कभी घर से बाहर निकलने की भी अनुमति नहीं थी, वे आज उद्यमी बनकर बाजारों में अपने उत्पादों को बेच रही हैं, सरकारी योजनाओं की जानकारी ले रही हैं और बैंक से सीधे लेन–देन कर रही हैं। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार आया है।

अब महिलाएँ निर्णय लेने में परिवार और समाज दोनों स्तर पर सक्रिय हो रही हैं। कई पुरुष, जो पहले महिलाओं के काम को महत्व नहीं देते थे, अब उनके साथ खड़े हैं। बच्चे भी गर्व से अपनी माताओं को उद्यमी के रूप में विकसित होते देख रहे हैं।

भविष्य की संभावनाएँ

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में यह स्टार्टअप पहल अभी शुरुआती दौर में है, लेकिन इसकी संभावनाएँ अपार हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म और ई–कॉमर्स के आने से अब ग्रामीण उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाने का रास्ता खुला है। सरकार और निजी संस्थानों के सहयोग से यदि इन स्टार्टअप्स को उचित मार्गदर्शन, तकनीकी प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता मिलती रही है। आने वाले समय में बिहार की ग्रामीण महिलाएँ भी स्टार्टअप इकोसिस्टम की महत्वपूर्ण भागीदार बनेंगी।

जीविका दीदियों की स्टार्टअप पहल ग्रामीण बिहार की तस्वीर को बदल रही है। यह बदलाव केवल रोजगार सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सम्मान और सामाजिक पहचान का प्रतीक है। आज बिहार की महिलाएँ साबित कर रही हैं कि उद्यमिता और नवाचार की क्षमता केवल शहरों तक सीमित नहीं है, बल्कि गाँव की मिट्टी से भी नए सपने और संभावनाएँ जन्म ले सकती है।

ई–रिक्शा वाली दीदी बनी प्रेरणा की स्रोत

मधेपुरा जिले के मुरलीगंज प्रखंड की खुशबू कुमारी जब वर्ष 2017 में शादी करके ससुराल आईं, तो परिवार की स्थिति बेहद दयनीय थी। उनके पति मानसिक रूप से बीमार थे और कोई भी काम करने में असमर्थ थे। ऐसे हालात में खुशबू को अपना जीवन अंधकारमय दिखाई दे रहा था। ऐसी मुश्किल वक्त में जीविका ने उन्हें उम्मीद की रौशनी दी।

उस वक्त उनके गांव में जीविका स्वयं सहायता समूह के गठन का कार्य चल रहा था। सामुदायिक उत्प्रेरक द्वारा महिलाओं को स्वयं सहायता समूह में जुड़ने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा था। इससे प्रेरित होकर खुशबू भी गुंजन जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। समूह में जुड़ने के पश्चात खुशबू इसकी नियमित साप्ताहिक बैठकों में हिस्सा लेने लगी। इससे उनमें आत्मविश्वास का संचार हुआ और अपने घर के हालात बदलने के लिए वह आगे कदम बढ़ाने का साहस जुटा पाई।

खुशबू ने वर्ष 2021 में गुंजन जीविका स्वयं सहायता समूह से 30,000 रुपये ऋण लेकर श्रृंगार की दुकान शुरू की। दुकान से थोड़ी आय होने लगी, लेकिन परिवार की स्थायी जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही थीं। इसके बाद उन्होंने साहस जुटाकर 50,000 रुपये ऋण लेकर और अपना कुछ पैसा जोड़कर एक ई–रिक्शा खरीदी। उन्होंने इसे खुद चलाने का निर्णय लिया। आज वह श्रृंगार की दुकान के साथ ई–रिक्शा भी चलाती हैं और महिला सशक्तीकरण की मिसाल पेश कर रही हैं। वर्तमान में उनकी मासिक आय 20,000 से 25,000 रुपये के बीच है। इससे उनके परिवार की स्थिति में सुधार हुआ है। हालांकि कुछ लोग अभी भी तंज कसते हैं कि गाँव की महिला ई–रिक्शा चलाती है। लोगों की इस बात पर खुशबू जवाब देती है कि "दुनिया बदल चुकी है, महिलाएँ अब ई–रिक्शा ही नहीं, हवाई जहाज भी चला रही हैं।"

खुशबू अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा, व्यवसाय का विस्तार और घर बनाने का सपना देख रही है। उनका मानना है कि जीविका से जुड़ाव ने ही उनके जीवन को बदला है। आज वह अपने प्रखंड में "ऑटो वाली दीदी" के नाम से जानी जाती हैं।

रिंकी देवी बनी उद्यमी जीविका दीदी

अरवल जिला के बंशी प्रखंड की रहने वाली रिंकी कुमारी ने एक सफल महिला उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनायी हैं। इंटर तक पढ़ी–लिखी रिंकी वर्ष 2016 से सरस्वती जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं। उनका कहना है कि जीविका से जुड़ने के बाद ही उनके जीवन में बड़ा बदलाव आया और आज वह "लखपति दीदी" के रूप में जानी जाती हैं।

समूह से जुड़ने से पहले उनके पति राज्य के बाहर प्राइवेट कंपनी में मजदूरी कर परिवार का भरण–पोषण करते थे। लेकिन रिंकी भी अपने परिवार की आय में सहयोग करना चाहती थीं। वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के दौरान उनके पति गाँव लौट आए और स्वरोजगार शुरू किया। उनके पति मशरूम उत्पादन में प्रशिक्षित थे, इसलिए रिंकी ने मशरूम उत्पादन शुरू करने का निर्णय लिया।

उन्होंने समूह की बैठक में ऋण की मांग की और उन्हें 50,000 रुपये का ऋण के रूप में प्राप्त हुआ। इससे उन्होंने गाँव मशरूम उत्पादन का कार्य शुरू किया। धीरे–धीरे उत्पादन और आय दोनों बढ़ने लगीं और उन्होंने एक साल के भीतर ही आमदनी कर ऋण चुका दिया।

इसके बाद उन्होंने दोबारा 1.5 लाख रुपये ऋण लेकर मशरूम उत्पादन केंद्र में एयर कंडीशन लगवाया, पैकिंग मशीन खरीदी और कंपोस्ट तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री खरीदी।

रिंकी बताती हैं कि वह एक सीजन में 1200 से 1300 बैग मशरूम लगाती हैं, जिस पर करीब 70–80 हजार रुपये की लागत आती है। इससे लगभग 18 क्विंटल मशरूम का उत्पादन होता है। उनकी सालाना आमदनी करीब 3.5 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

रिंकी अब अपने मशरूम व्यवसाय का लगातार विस्तार कर रही है। वह समय पर ऋण भी वापस करती हैं और अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं। उनकी सफलता ने उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है।

परिवार की खुशहाली की धुरी बनी बिंदु

जमुई जिला के खैरा प्रखंड के कगेष्वर पंचायत की बिंदु देवी आज अपने संयुक्त परिवार की खुशहाली की धुरी है। उन्होंने जीविका के सहयोग और अपनी सक्रियता से परिवार को तरक्की की राह पर अग्रसर किया है। बिंदु के पिता सीमांत किसान थे और खेती–बाड़ी से अपने परिवार का किसी तरह गुजारा करते थे। इससे बचपन से ही उनमें कृषि और पशुपालन की गहरी समझ विकसित हुई।

बिंदु देवी ने वर्ष 2008 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच बिंदु देवी की शादी 27 जून 2010 को हो गई। लेकिन शादी के बाद उन्होंने वर्ष 2011 में इंटर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। तदुपरांत आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए वर्ष 2013 में उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा की परीक्षा 80 प्रतिशत अंकों से पास की। शादी के बाद उन्होंने ससुराल में भी खेती और पशुपालन का कार्य संभाला। अपने भाई को पढ़ाई के लिए प्रेरित करती रहीं और आज उनका भाई सूर्यगढ़ा में शिक्षक के रूप में कार्यरत है।

19 दिसंबर 2017 को बिंदु देवी जीविका से जुड़ीं और 2018 से जीविका मित्र बनीं। वर्तमान में वह 15 समूहों को संचालन का कार्य करती हैं। वह समूहों का बैंक में बचत खाता और ऋण खाता खुलवाने हेतु दस्तावेज तैयार करने का कार्य करती है। वर्तमान में 12 समूहों को तृतीय किस्त प्राप्त हो चुका है। उन्होंने 85 महिलाओं को ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) से प्रशिक्षण दिलवाया और बैंक से ऋण हेतु आवेदन भी कराया है। उन्हें खेती और पशुपालन से विशेष लगाव है। ऐसे में इन्होंने समूह से ऋण लेकर गाय खरीदी।

अब इनके पास 3 गाय और 6 बकरियाँ हैं। जुलाई 2024 में बिंदु ने 80,000 रुपये समूह से ऋण लेकर तथा अपनी जमा पूँजी लगाकर बैंक से किश्त पर स्कॉर्पियो खरीदी। बिंदु देवी के पति गाड़ी चलाते हैं। अब उनके पास दो स्कॉर्पियो हैं। इस कार्य से उनकी मासिक आय लगभग 40,000 रुपये से ज्यादा हो गई है। परिवार के पास 5 बीघा खेत है, जिसमें वह आधुनिक विधि से धान, गेहूं, मक्का, सरसों और विभिन्न सब्जियों की खेती करती है। बिंदु देवी के परिवार में पति एवं सास ससुर के अलावा देवर–देवरानी और उनके बच्चे भी रहते हैं। आज वह अपने संयुक्त परिवार की धुरी हैं। व्यवहार कुशल और समर्पित स्वभाव के कारण परिवार के सभी सदस्य उनका सम्मान करते हैं। संयुक्त परिवार की खुशहाली में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जीविका से मिली मदद तो प्रेमलता बनी सफल उद्यमी

प्रेमलता देवी की कहानी संघर्ष और सफलता का अनोखा उदाहरण है। कभी संपन्न घराने से ताल्लुक रखने वाली प्रेमलता देवी का जीवन अचानक बदल गया, जब उनके पति प्रेम कुमार सिंह सड़क हादसे में घायल हो गए। पहली बार हादसे के बाद स्थिति ज्यादा खराब नहीं हुई, लेकिन कुछ ही महीनों बाद हुए दूसरे हादसे में उनके पिता का भी निधन हो गया। आर्थिक और मानसिक संकट से जूझते हुए अस्पताल का खर्च उठाने के लिए संपत्तियाँ तक बेचनी पड़ीं।

बावजूद इसके प्रेमलता ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने संघर्ष करते हुए फिर से उठने का संकल्प लिया और उद्योग शुरू करने की ठानी। प्रेमलता कुमारी, बेगूसराय जिले के बरौनी प्रखंड अंतर्गत हाजीपुर गाँव की निवासी हैं। पाँच वर्ष पूर्व वह जीविका से जुड़ीं और 35 दिनों का अगरबत्ती निर्माण हेतु प्रशिक्षण आरसेटी से प्राप्त किया। इसके बाद जीविका से 40 हजार रुपये का ऋण लेकर "प्रेरणा अगरबत्ती" नाम से उद्योग की नींव रखी।

शुरुआत से ही बिक्री बेहतर रही और धीरे–धीरे कारोबार बढ़ता गया। आज वह पाँच महिलाओं को रोजगार भी दे रही है। महज पाँच वर्षों में 40 हजार रूपये के निवेश को उन्होंने 5 लाख से ऊपर पहुँचा दिया है। उनकी बनाई प्रेरणा और रामायण अगरबत्ती 10 से 250 रुपये तक की पैकिंग में उपलब्ध है। अब उनका यह उत्पाद बिहार के कई जिलों में बिकने के साथ–साथ फ्लिपकार्ट और मेशो जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध है।

आज प्रेमलता हर महीने लगभग एक लाख रुपये तक की बिक्री कर 15 से 20 हजार रुपये की आमदनी अर्जित करती हैं। वह लखपति दीदी के रूप में पहचानी जाती हैं और विभिन्न मंचों पर अपनी सफलता की कहानी साझा करने के लिए आमंत्रित होती हैं। उनकी प्रेरणा से दर्जनों दीदियों ने भी उद्यमिता की राह पकड़ी है।

रूबी देवी : जीविका की बदौलत बनी सशक्त और स्वावलंबी

भागलपुर जिला के नारायणपुर प्रखंड अन्तर्गत सिहपुर गाँव की रहने वाली रूबी देवी का जीवन पहले बेहद संघर्षपूर्ण था। सीमित संसाधनों और स्थायी रोजगार के अभाव में परिवार का भरण–पोषण करना उनके लिए बड़ी चुनौती थी। पति की आय पर्याप्त नहीं थी और बच्चों की जरूरतें पूरी कर पाना लगभग असंभव सा हो गया था। अक्सर घर के खर्च पूरे नहीं हो पाते और पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ता जा रहा था। इन्हीं कठिन परिस्थितियों के बीच रूबी देवी को जीविका से जुड़ने का अवसर मिला। जीविका समूह से जुड़ने के बाद रूबी के जीवन में धीरे–धीरे बदलाव आना शुरू हुआ।

समूह से जुड़ाव : रूबी देवी 5 अगस्त 2014 को सीता जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह की बैठकों में शामिल होने और अन्य महिलाओं की प्रेरणादायक बातें सुनने के बाद उनके मन में भी आत्मनिर्भर बनने की चाह जगी। समूह की बैठक में नियमित रूप से भाग लेने से उन्होंने बचत करना सीखा। इसके अलावा उनमें वित्तीय साक्षरता और सामाजिक व आर्थिक जागरूकता आई। समूह की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेने से उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने आगे बढ़ने का दृढ़ निश्चय किया। ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ के सहयोग से उन्हें विभिन्न योजनाओं की जानकारी मिली और धीरे–धीरे उन्होंने उद्यमिता की राह पर अपना कदम बढ़ाया।

व्यवसाय की शुरुआत और मेहनत से मिली सफलता : वर्ष 2018 में रूबी ने सीता जीविका स्वयं सहायता समूह से 50 हजार रुपये ऋण लेकर चाय की दुकान की शुरुआत की। उद्यमिता की ओर उनका यह पहला कदम था। काफी लगन और मेहनत से वह चाय की दुकान का संचालन करने लगी। चाय की अच्छी स्वाद और अपने उत्तम व्यवहार धीरे–धीरे ग्राहक जुड़ने लगे। समय के साथ ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी और उनकी कमाई में इजाफा होने लगा। रूबी बताती है कि सुबह और शाम दुकान पर ग्राहकों की अच्छी भीड़ रहती है। फिलहाल वह चाय, बिस्कुट आदि बेचकर रोजाना औसतन 400 से 500 रुपये तक की कमाई कर लेती है। दुकान से हुई आय से उन्होंने बकरियाँ खरीदी। फिलहाल उनके पास 4 बकरियां है। इससे उन्हें अतिरिक्त आमदनी हो जाती है।

उद्यम का विस्तार: रूबी देवी ने पहले महज एक ढेले और चाय की केतली के साथ से इस व्यवसाय की शुरूआत की थी। लेकिन अब उन्होंने किराये पर दुकान ले ली है। समूह से पुन : 50 हजार रुपये ऋण लेकर दुकान का विस्तार किया। इससे दुकान में ग्राहकों के बैठने के लिए कुर्सियां और बेंच की व्यवस्था की। ग्राहकों के लिए सुविधाओं का विस्तार करने तथा अन्य प्रकार की खाद्य सामग्रियों की बिक्री प्रारंभ करने से रूबी देवी की आमदनी में भी इजाफा हुआ है। इस व्यवसाय से आज उनकी मासिक आय बढ़कर 14,000 से 15,000 हजार रुपये तक हो गई है। उन्हें व्यवसाय से जो आय हो रही है उससे वह अपने परिवार का अच्छी तरह परवरिश करने के साथ ही बचत भी कर रही है। परिणामस्वरूप आज वह अपने भविष्य के लिए अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर महसूस करती है।

जीविका से मिला नया आत्मबल: रूबी देवी बताती हैं कि जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें केवल आर्थिक सहयोग ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान और नेतृत्व करने की ताकत भी मिली है। पहले जो महिला समूह में बोलने से भी हिचकती थी, आज वही समूह की बैठकें आत्मविश्वास से संचालित करती हैं और अन्य महिलाओं को भी बोलने के लिए प्रेरित करती हैं। रूबी देवी आज न केवल अपने घर की जिम्मेदारियों को अच्छे से निभा रही हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन गई हैं। गाँव की महिलाएं उन्हें एक आदर्श की तरह देखती हैं। उनकी सफलता की कहानी यह सिखाती है कि सामूहिक प्रयास, सरकारी योजनाओं का लाभ और स्थानीय नेतृत्व से महिलाएँ सशक्त बन सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार